

भारत - नॉर्वे समुद्री प्रदूषण पहल

चर्चा में क्यों

- पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने नॉर्वे के विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर भारत - नॉर्वे समुद्री प्रदूषण पहल पर समझौता किया।
- ब्लू अर्थव्यवस्था के बारे में सरकारी अधिकारियों अनुसंधानकर्ताओं और विशेषज्ञों के अलावा निजी क्षेत्र को शामिल करके एक संयुक्त कार्यबल की स्थापना की गई।
- इसका उद्देश्य समुद्रीय और समुद्र क्षेत्र के अलावा ऊर्जा क्षेत्र में ब्लू अर्थव्यवस्था के रणनीतिक क्षेत्रों में स्थायी समाधान विकसित करना है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- इस भागीदारी में भारत और नॉर्वे अपने अनुभव और क्षमता साझा करेंगे, तथा स्वच्छ और स्वस्थ महासागरों के विकास, समुद्रीय संसाधनों का सतत उपयोग और ब्लू अर्थव्यवस्था के विकास के प्रयासों में सहयोग करेंगे।
- यह समस्या तेजी से बढ़ती हुई पर्यावरणीय चिंता बन गयी है।
- इस पहल को लागू करने वाले भागीदारों की श्रृंखला के माध्यम से यह पहल स्थायी अपशिष्ट प्रबंधन प्रक्रियाओं को लागू करने, समुद्री प्रदूषण के स्रोतों और संभावनाओं के बारे में जानकारी को एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए प्रणाली विकसित करने तथा निजी क्षेत्र निवेश में सुधार लाने में स्थानीय सरकारों को सहायता देने की मांग करेगी।
- इससे समुद्र तट की सफाई के प्रयासों, जागरूकता बढ़ाने वाले अभियानों, सीमेंट उद्योग में कोयले की जगह प्लास्टिक अपशिष्ट को ईंधन के विकल्प के रूप में उपयोग करने और जमा योजनाओं के लिए ढांचा विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

ब्लू इकोनॉमी क्या है?

विश्व बैंक के अनुसार, ब्लू इकोनॉमी आर्थिक विकास, बेहतर आजीविका, और नौकरियों के लिए महासागरीय संसाधनों का सतत उपयोग है, जबकि महासागर पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का संरक्षण करता है।

- यह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महासागरों से जुड़े कई क्षेत्रों को कवर करता है जैसे – मत्स्य पालन, खनिज, शिपिंग और बंदरगाह अवसंरचना, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, समुद्री नवीकरणीय ऊर्जा, समुद्री पर्यटन, महासागर शासन और शिक्षा।
- **समुद्री प्रदूषण**- समुद्री प्रदूषण तब होता है जब रसायन, कण, औद्योगिक, कृषि और रिहायशी कचरा, या आक्रामक जीव महासागर में प्रवेश करते हैं और हानिकारक प्रभाव, या संभवतः हानिकारक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। समुद्री प्रदूषण के ज्यादातर स्रोत थल आधारित होते हैं। प्रदूषण अक्सर कृषि अपवाह या वायु प्रवाह से पैदा हुए कचरे जैसे अस्पष्ट स्रोतों से होता है।
- समुद्री प्रदूषण के प्रमुख स्रोत रसायन, ठोस अपशिष्ट, रेडियोधर्मी तत्वों का निर्वहन, औद्योगिक और कृषि अपशिष्ट, मानव निर्मित अवसादन, तेल फैल और ऐसे कई कारक हैं।
- समुद्री प्रदूषण के प्रकार -सुपोषण ,अम्लीकरण ,विषाक्त पदार्थों, प्लास्टिक आदि

समुद्री प्रदूषण के प्रभाव

- अत्यधिक पोषक तत्वों द्वारा पानी का प्रदूषण पोषक तत्व प्रदूषण के रूप में जाना जाता है, यह एक प्रकार का **जल प्रदूषण** है जो जलीय जीवन को प्रभावित करता है। जब नाइट्रेट्स या फॉस्फेट जैसे अतिरिक्त पोषक तत्व पानी के साथ विघटित हो जाते हैं तो यह सतह के पानी के यूट्रोफिकेशन का कारण बनता है, क्योंकि यह अतिरिक्त पोषक तत्वों के कारण शैवाल के विकास का कारण बनता है
- जब समुद्री पारिस्थितिक तंत्र कीटनाशकों को अवशोषित करता है, तो वे समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के खाद्य जाल में शामिल होते हैं। समुद्री खाद्य जाल में विघटित होने के बाद, ये हानिकारक कीटनाशक उत्परिवर्तन का कारण बनते हैं और इसके परिणामस्वरूप बीमारियाँ भी होती हैं, जो पूरे खाद्य जाल तथा मनुष्यों को नुकसान पहुँचा सकती हैं।

समुद्री प्रदूषण को रोकने के उपाय

- प्लास्टिक का उपयोग करना बंद करें क्योंकि वे न केवल नालियों को जाम कर देते हैं बल्कि समुद्रों में भी पहुँच जाते हैं।
- किसानों को रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से भारी परिवर्तन कर जैविक खेती के तरीकों के उपयोग की ओर बढ़ने की जरूरत है।

- सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें और छोटे एवं सारभूत उपायों को अपनाकर कार्बन उत्सर्जन को कम करें जो ना केवल पर्यावरण से प्रदूषण को कम करने में मदद करेगा बल्कि आगामी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य भी सुनिश्चित करेगा।
- समुद्रों में किसी भी प्रकार के तेल या केमिकल को फैलाव को रोकें